PARIPEX - INDIAN JOURNAL OF RESEARCH | Volume-9 | Issue-3 | March - 2020 | PRINT ISSN No. 2250 - 1991 | DOI : 10.36106/paripex

ORIGINAL RESEARCH PAPER

Ayurveda

वर्तमान परिपेक्ष्य मे संस्कृत का आयुर्वेद मे महत्व एवं स्थिति

KEY WORDS: आयुर्वेद, दशा, दिशा ,संस्कृत, भाषा ,चिकित्सा,वनौषधि।

डॉ. लोकेन्द्र रावत स्नातकोत्तर अध्येता तृतीय वर्ष द्रव्यगुण विज्ञान विभाग

डॉ. सुनीता डी राम विभागाध्यक्ष एवं रीडर द्रव्यगुण विज्ञान विभाग, शा. स्व. धन्वन्तरि आयुर्वेद महाविद्यालय एवं चिकित्सालय उज्जैन (म.प्र.)

ABSTRACT

आयुर्वेद भारतवर्ष की एक अत्यंत प्राचीनतम चिकित्सा पध्दति है। तथा आयुर्वेद ग्रंथो की मूल भाषा संस्कृत है अर्थात आयुर्वेद के चिकित्सा सिद्धांत संस्कृत भाषा मे है। जैसा कि आचार्य चरक ने कहा है.

''हिताहितं सुखं दुःखमायुस्तस्य हिताहितं।
मानं च तच्च यत्रोक्तमायुर्वेदः स उच्चतेश्श।।
;च.सू. 1ध41द्ध

इसी प्रकार आयुर्वेद का प्रयोजन -

प्रयोजनं चास्य स्वस्थस्य स्वास्थ्य रक्षणं आतुरस्य विकार प्रशमनं चश्श !
;च.सू.30ध26द्ध

अर्थात आयुर्वेद चिकित्सा शास्त्रों में आचार्यो ने विषय का विस्तृत वर्णन न करते हुए उन्हें एक सूत्ररूप मे वर्णित किया है। चूंकि आयुर्वेद चिकित्सा पध्दति मुख्य रूप से वनौषधियो से की जाती है। इसी तारतम्य मे विभिन्न वनौषधियो को क्षैत्र -स्थान विशेष के आधार पर भिन्न - भिन्न नाम एवं पर्यायो के आधार पर पहचाना / जाना जाता है।
चूँकि संस्कृत एकमात्र ऐसी भाषा है जो विभिन्न नाम व पर्यायो को एक सूत्र मे पिरोने का काम करती है।

भयोगवित्त्वप्यरूपज्ञस्तासां तत्वविदुच्यतेश्श! **;च.सू. 1ध123द्ध**

जिसका वर्णन "नाम-रूप-विज्ञानं " से पृथक रूप से वर्णन मिलता है। साथ ही साथ संदिग्ध द्रव्यों को संस्कृत नाम से सरलतम रूप मे समझ सकते है।
सनातन सभ्य प्राचीनतम भाषा जो उस समय श्महर्षि पाणिनिश ने श्अष्ठअध्यायश नाम से वर्णीत किया है। विश्व की सबसे बड़ी व्याकरण है तो वह संस्कृत है। देवभाषा है। वर्तमान में 90ः लोग पाश्चात्य देशों की भाषा की ओर अग्रेषित है तथा इन्हें हमारी प्राचीनतम भाषा संस्कृत की ओर आकर्षित करना एक हालात बन चुका है। अर्थात वर्तमान मे आयुर्वेद के हालात एवं दिशा जो भविष्य मे आयुर्वेद के विकास को दर्शाता है।

प्रस्तावना—

भाषाएँ एक संपूर्ण भू भाग के जीवन की सांस्कृतिक चेतना की संवाहक होती है! संस्कृत विश्व की प्राचीनतम भाषा है, विश्व को सर्वप्रथम विश्व बंधुत्व की अवधारणा सदियों पहले हमारे संस्कृत साहित्य द्वारा ही मिला है !

"अयं निजः परोवेति गणनालघुचेतषां |
उदार चरितानां तु वसुधेव कुटुम्बकम" ||

संस्कृत सिर्फ एक भाषा नही है अपितु भारतीय संस्कृति की प्राण वायु है| पाश्चात्य द्वारा भारतीय ग्रंथो जैसे श्रीमदभागवत और हितोपदेश का अनुवाद विशेष उल्लेखनीय है|

भाषाएँ नदियाँ के समान होती है इनके प्रवाहमान रहने से ही देश,काल,संस्कृति,सभ्यताएँ विकषित होती है | ७वीं शताब्दी मे जब अरब के खलीफा वंश का शासन था | तब याहिया बिनखालिद बरम की ने भारत से विभिन्न विषयों के ज्ञाता विद्वानों को बुलाया था | इस प्रकार मध्य एशिया का संस्कृत से परिचय हुआ | खलीफा अलमामन के शासनकाल मे तो वहाँ संस्कृत को विशेष संरक्षण मिला | जो संस्कृत के वैविध स्वरुप को दृष्टि गोचर करता है | प्राचीन और नवीन का सामंजस्य भारतीय संस्कृति की विशेषता रही है इसका स्पष्ट उल्लेख गुप्तकाल मे कवि कालिदास ने कहा है –

"कारण मित्येव न साधु सर्व न चापि काव्यं नवमित्यवधम" !

आयुर्वेद की शिक्षण व्यवस्था मे संस्कृत भाषा प्रमुख माध्यम है संस्कृत को वैश्विक लोक प्रियता का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है, आज यूरोप, अमरीका, इजरायल,जर्मनी सहित दुनिया के २०० विश्वविद्यालयो मे संस्कृत का अध्ययन अध्यापन कराया जा रहा है! आयुर्वेद एक अत्यंत प्राचीनतम चिकित्सा पद्धति है। तथा आयुर्वेद की मूल भाषा शैली संस्कृत है अर्थात आयुर्वेद के चिकित्सा सिद्धान्त संस्कृतमय है।संस्कृत भाषा का ज्ञान आयुर्वेद को समझने मे अहम भूमिका निभाता है। आयुर्वेद एवं आयुर्वेद से सम्बंधित सभी पाठ्यक्रमो के विषय की भाषा संस्कृत है।संस्कृत भाषा के ज्ञान से ही आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति और अधिक लाभदायक सिद्ध होगी तथा चिकित्सक भी मरीजो की मनोदशा को समझकर उचित उपचार कर सकेंगे।

संस्कृत भाषा का इतिहास--

जिस प्रकार देवता अमर हैं उसी प्रकार सँस्कृत भाषा भी अपने विशाल-साहित्य, लोक हित की भावना ,विभिन्न प्रयासों तथा उपसर्गों के द्वारा नवीन-नवीन शब्दों के निर्माण की क्षमता आदि के द्वारा अमर है। आधुनिक विद्वानों के अनुसार संस्कृत भाषा का अखंड प्रवाह पाँच सहस्र वर्षों से बहता चला आ रहा है। आज भी सभी क्षेत्रों में इस भाषा के द्वारा ग्रंथनिर्माण की क्षीण धारा अविच्छिन्न रूप से वह रही है। आज भी यह भाषा, अत्यंत सीमित क्षेत्र में ही सही, बोली जाती है। हिंदओं के सांस्कारिक कार्यों में आज भी यह प्रयुक्त होती है। इसी कारण ग्रीक और लैटिन आदि प्राचीन मृत भाषाओं (डेड लैंग्वेजेज़) से संस्कृत की स्थिति भिन्न है। यह मृतभाषा नहीं, अमरभाषा है।

ऋक्संहिता की भाषा को संस्कृत का आद्यतम उपलब्ध रूप कहा जा सकता है। कुछ विद्वान् प्राचीन वैदिक भाषा को परवर्ती पाणिनीय (लौकिक) संस्कृत से भिन्न मानते हैं।पर यह पक्ष भ्रमपूर्ण है। वैदिक भाषा अभ्रांत रूप से संस्कृत भाषा का आद्य उपलब्ध रूप है। पाणिनि ने जिस संस्कृत भाषा का व्याकरण लिखा है उसके दो अंश हैं -
(1) जिसे अष्टाध्यायी में "छंदप्" कहा गया है, और
(2) भाषा (जिसे लोकभाषा या लौकिक भाषा के रूप में माना जाता है)

आचार्य पतंजलि के "व्याकरण महाभाष्य" नामक प्रसिद्ध शब्दानुशासन के आरंभ में भी वैदिक भाषा और लौकिक भाषा के शब्दों का उल्लेख हुआ है।

"संस्कृत नाम दैवी वागन्वाख्याता महर्षिभि:"

वाक्य में जिसे देवभाषा या 'संस्कृत' कहा गया है वह संभवत: यास्क, पाणिनि, कात्यायन और पतंजलि के समय तक "छंदोभाषा" (वैदिक भाषा) एवं "लोकभाषा" के दो नामों, स्तरों व रूपों में व्यक्त किया है। इसी भाषा को संस्कृत, संस्कृत भाषा या साहित्यिक संस्कृत नामों से जाना जाता है।

काल विभाजन-

संस्कृत भाषा के विकास स्तरों की दृष्टि से अनेक विद्वानों ने अनेक रूप से इसका ऐतिहासिक काल विभाजन किया है। सामान्य सुविधा की दृष्टि से अधिक मान्य निम्नांकित काल विभाजन दिया जा रहा है -

(1) आदिकाल (वेदसंहिताओं और वाङ्मय का काल - ई. पू. 10 से 450 ई. पू. तक)
(2) मध्यकाल (ई. पू. 450 से 1450 ई.पू. तक जिसमें शास्त्रों दर्शनसूत्रों, वेदांग ग्रंथों, काव्यों तथा कुछ प्रमुख साहित्यशास्त्रीय ग्रंथों का निर्माण हुआ)
(3) परवर्तीकाल (1450 ई.पू. से लेकर या अब तक का आधुनिक काल)

संस्कृत का आयुर्वेद में महत्व-

आयुर्वेद एक अत्यंत प्राचीनतम चिकित्सा पद्धति है। तथा आयुर्वेद की मूल भाषा शैली संस्कृत है अर्थात आयुर्वेद के चिकित्सा सिद्धान्त संस्कृतमय है। जैसा कि आचार्य चरक ने कहा है -

"हिताहितं सुखं दुःखमायुस्तस्य हिताहितं।
मानं च तच्च यत्रोक्तमायुर्वेद: स उच्चते"।।(च.सू. 1/41)

इसी प्रकार आयुर्वेद का प्रयोजन -

"प्रयोजनं चास्य स्वस्थस्य स्वास्थ्य रक्षणं आतुरस्य विकार प्रशमनं च !"
(च.सू.30/26)

अर्थात कहने का मात्र केवल इतना है कि आयुर्वेद चिकित्सा शास्त्रों में आचार्यो ने विषय का विस्तृत वर्णन न करते हुवे उन्हें एक सुत्रो के माध्यम से समझाया है। चूंकि आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति मुख्य रूप से वनौषधियो से की जाती है। इसी तारतम्य मे विभिन्न वनौषधियो को क्षैत्र-स्थान विशेष के आधार पर भिन्न - भिन्न नाम एवं पर्यायो के आधार पर पहचाना / जाना जाता है। चूँकि संस्कृत एकमात्र ऐसी भाषा है जो विभिन्न नाम व पर्यायो को एक सूत्र मे पिरोने का काम करती है।

जिसका वर्णन "नाम-रूप-विज्ञानं " से पृथक रूप से वर्णन मिलता है। साथ ही साथ संदिग्ध द्रव्यों को संस्कृत नाम से सरलतम रूप मे समझ सकते है। सनातन सभ्य प्राचीनतम भाषा जो उस समय 'महर्षि पाणिनि' ने 'अष्टअध्याय' नाम से वर्णीत किया है। विश्व की सबसे बड़ी व्याकरण है तो वह संस्कृत है। जिसे समझना अत्यंत शोभनीय है। वर्तमान में 90% लोग पाश्चात्य देशों की भाषा की ओर अग्रेषित है तथा इन्हें हमारी प्राचीनतम भाषा संस्कृत की ओर आकर्षित करना एक हालात बन चुका है। अर्थात दशा वर्तमान मे आयुर्वेद के हालात एवं दिशा जो भविष्य मे आयुर्वेद के विकास को दर्शाता है।

संस्कृत भाषा का लुप्त होना- अजीब-

भारत में संस्कृत भाषा का प्रयोग कम होना एक अचंभे की बात है, कुछ लोग कहते हैं कि संस्कृत के कठिन होने के कारण इसे वर्तमान शिक्षा प्रणाली से हटा दिया गया। परन्तु दुनिया की सबसे कठिन भाषा तो चीनी है, फिर उन्होंने चीनी भाषा का प्रयोग बंद क्यों नहीं कर दिया। संस्कृत का हमारे समाज से प्रयोग लुप्त होकर हिन्दी एवं अन्य भाषाओं में बदलना बड़ा ही अजीब है। ऐसा लगता है कि हिंदी एवं अन्य भाषाऐं संस्कृत को तोड़ मरोड़ कर बनी है। किन्तु आयुर्वेदिक दृष्टिकोण से देखा जाये तो बुद्धि तत्व के विकास के साथ साथ हमने सरलतम वस्तुओं को अत्यंत कठिन बना लिया है एवं बुद्धि के द्वारा ही अहंकार बना है तथा अहंकार से ही सृष्टि की उत्पति हुई है। और इसी बुद्धि रूपी अहंकार ने हमारी संस्कृत को जकड़ लिया है।

उपसंहार-

संस्कृत भाषा का निर्माण भगवान शिव के डमरू के द्वारा निर्मित हुआ है, जिससे हम प्रकृतिस्थ निर्मित भाषा माना जाना भी उचित होगा।

महादेवी वर्मा जी ने कहा है कि-
शब्दो को भावार्थ की जरूरत नही लेकिन जो शब्द पहले बोले जाते हो वही वास्तव में भावार्थ होता है। किसी माता और पिता का संतान के प्रति जो भावार्थ है वही प्रकृतिस्थ है और प्रकृति ही शिव है। आपका नजरिया किस स्तर का है, ये आपकी बुद्धि पर निर्भर करता है | द्वन्दता भले ही भौतिक हो या वैचारिक हो या शाब्दिक हो जब तक नष्ट नही होगी तब तक विविधता या मत विभाजन बना रहेगा ,जिस दिन द्वन्दता समाप्त उस दिन हम सब प्रकृतिमय हो जाएंगे और यही प्रकृति हमारी संस्कृति है। संस्कृति भगवान के द्वारा रचित एक भाषा है यही प्रकृति है।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

१. चरक संहिता पूर्वार्ध
२. नामरूप विज्ञानं – आचार्य प्रियवृत शर्मा
३. आयुर्वेद का वैज्ञानिक इतिहास – आचार्य प्रियवृत शर्मा
४. पाणिनि अष्टाध्यायी
५. व्याकरण महाभाष्य – आचार्य पातंजलि
६. भारत के प्राणाचार्य - कवि राज रत्नाकर शास्त्री